स्नातकोत्तर हिन्दी, द्वितीय सेमेस्टर

षष्ठ पत्र

भक्त कवि तुलसीदास के 'रामचरित मानस' (अयोध्याकांड) के प्रस्वीकृत पद : अर्थ विश्लेषण

प्रस्तोताः

डॉ. रमेश प्रसाद गुप्ता
सह–प्रोफेसर, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
रामदयालु सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर

अयोध्या कांड

दोहा (185)

''जरउ सो संपति सदन सुखु सुहृद मातु पितु भाई।
सनमुख होत जो राम पद करै न सहस सहाई।।''

भक्त कवि तुलसीदास एक सगुण भक्त कवि हैं, जिनके आराध्य श्रीराम हैं। उन्होंने श्रीरामचरित–कथा को केन्द्र में रखकर कालजयी ग्रंथ 'रामचरितमानस' की रचना की। 'रामचरितमानस' न केवल हिन्दी का वरन् सम्पूर्ण भारतीय भाषा एवं वाङ्मय का एक महत्वपूर्ण काव्य–ग्रंथ है, जो आज भी अपने राम–चरित वर्णन एवं लोकमंगलत्व के कारण जन–जन में ख्यात है। प्रस्वीकृत पाठ्यक्रम में हमें 'रामचरितमानस' के 'अयोध्या कांड' के एक सौ पचासी दोहे से लेकर अंतिम दोहे तक का अध्ययन–विवेचन करना है। अयोध्या कांड 'रामचरितमास महाकाव्य' का अंग होते हुए भी अपने–आप में एक पूर्ण प्रबन्ध–काव्य है; जिसकी कथावस्तु वाल्मीकि रामायण पर आधारित है और इसकी रचना का मूल दृष्टिकोण धार्मिक न होकर साहित्यिक है। 'अयोध्याकांड' की कथा–वस्तु का मूल कथ्य राम का निर्वासन–प्रसंग है, जो अनेक रूपों में विकसित होती दीख पड़ती है।

प्रस्तुत प्रस्वीकृत दोहा कवि तुलसीदास के 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकांड' में संकलित है, जो राम–निर्वासन के पश्चात् भाई भरत के उनसे वन में मिलने जाने की तैयारी की मनःस्थिति का प्रसंग है। प्रस्तुत दोहे की पृष्ठभूमि के प्रसंग में भरत श्रीराम से वन मिलने जाने को व्यत होते हैं और सबको वन में चलने के लिए तैयार होने को कहते हैं। इसी कड़ी में प्रस्तुत दोहे में कवि कहता है 'वह सम्पति, घर, सुख, माता, पिता भाई सभी जल जाएँ या जल जाने योग्य हैं, जो श्रीराम के चरणों के सम्मुख होने में सहस्रों (सहस्र)/हर भांति से सहायता न करें। 'यानि श्रीराम के

दर्शन निमित्तस सभी धन–सम्पति, घर, कुटुम्ब आदि का हर भांति साथ देना और सहयोग करना आवश्यक है। क्योंकि श्रीराम ऐसे हैं, जो सर्वथा सबके लिए समान रूप से काम्य हैं। प्रस्तुत दोहे में कवि तुलसीदास ने श्रीराम के दर्शन हेतु सबको हर भांति तत्पर एवं सहयोगी होने को कहा है, क्योंकि वे ही सबके प्रिय एवं काम्य हैं।

दोहा (186)

''आरति जननी जानि सब भारत सनेह सुजान।
कहेउ बनावन पालकी सजन सुखासन जान।।''

प्रस्तुत प्रस्वीकृत दोहे में श्रीराम से वन में मिलने जाने के तैयारी के प्रसंग में कवि तुलसीदास कहते हैं कि स्नेह के मर्मज्ञ भरत ने सभी माताओं को दुखी जानकर पालकी सुखासन एवं रथ (यान) सजाने के लिए (सजावन) कहा। यानि सभी माताओं को श्रीराम से मिलने को दुखी, व्याकुल देख स्नेही–सहृदय भरत ने उनको श्रीराम से मिलाने ले जाने हेतु अपने सेवकों को पालकी एवं रथ आदि सजाने और तैयार करने को कहा। प्रस्तुत दोहे में श्री भरत की सहृदयता एवं स्नेहिलता प्रकट होती है। वैसे भरत का किसी को दुखी एवं आहत करने का स्वभाव नहीं।

दोहा (187)

''सौपि नगर सुचि सेवकनि सादर सकल चलाइ।
सुमिरि रामसिय–धरन तब चले भरत दोउ भाइ।।''

प्रस्तुत प्रस्वीकृत दोहे में श्रीराम से मिलने वन जाने हेतु सभी के अयोध्या से प्रस्थान का प्रसंग है। कवि तुलसीदास प्रस्तुत दोहे में कहते हैं कि नगर को विश्वसनीय एवं सुचि यानि पवित्र भाव वाले सेवकों को सौंप करके आदरपूर्वक सभी को प्रस्थान करा करके तब भरत एवं शत्रुघ्न दोनों भाई श्रीराम एवं सीता के चरणों का स्मरण करके चले। अर्थात् श्रीराम से वन में मिलने जाने हेतु सबको प्रस्थान कराके और विश्वसनीय एवं पवित्र भाव वाले सेवकों को नगर की देख–रेख सौंपकर तब श्री भरत एवं शत्रुधन दोनों भाई श्रीराम–सीता के चरण का स्मरण करके चले। प्रस्तुत दोहे में श्री भरत का जिम्मेदारी एवं दायित्व भाव प्रकट होता है, जो अपने कर्तव्य का निष्ठा से निर्वाह करते दिखते हैं।

♣♣♣♣♣